Group:)

साधारणतया समूह का तात्पर्य व्यक्तियों के समूह से समझा जाता है। यह धारणा समाजशास्त्रीय रूप से पर्याप्त नहीं है। समूह का निर्माण केवल उन्हीं व्यक्तियों से होता है जो अपने विभिन्न स्वार्थों अथवा आवश्यकताओं के कारण स्वयं को एक-दूसरे से सम्बन्धित समझते हैं। उदाहरण के लिए, राम को पार्क में बैठे हुए हजारों व्यक्तियों के भीड़ को हम एक समूह नहीं कह सकते क्योंकि इस भीड़ में कोई भी व्यक्ति दूसरे को प्रभावित नहीं कर रहा होता है। इसी प्रकार रेल के डिब्बे में बैठे हुए व्यक्ति अथवा दुकान में वस्तुओं को खरीदती हुई भीड़ को भी समूह नहीं कहा जा सकता। दूसरी ओर, ऐसे सभी व्यक्ति जो एक पड़ोस, जाति, वर्ग, गाँव अथवा राजनीतिक दल के सदस्य होने के कारण स्वयं को एक-दूसरे से सम्बन्धित समझते हैं और एक दूसरे से अन्तःक्रिया करते हैं, एक-एक समूह का निर्माण करते हैं। इस आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक समूह का तात्पर्य कुछ व्यक्तियों के व्यक्तियों द्वारा एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करना तथा एक-दूसरे के व्यवहारों को प्रभावित करना है। सापिर का कथन है कि "समूह का निर्माण इस तथ्य पर आधारित है कि कोई न कोई विशेष स्वार्थ एक समूह के सदस्यों को एकता के सूत्र में बाँधे रखता है।"

सामाजिक समूह की अवधारणा को यद्यपि अनेक आधारों पर स्पष्ट किया गया है लेकिन कुछ अधिक महत्वपूर्ण विशेषताओं के आधार पर सामाजिक समूह की अवधारणा को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है:

MacIver (मैकीवर) का कथन है, "समूह से हमारा तात्पर्य व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है जो सामाजिक सम्बन्ध के द्वारा एक-दूसरे के समीप रहते हैं।" इस कथन से स्पष्ट होता है कि जब तक कुछ व्यक्ति पारस्परिक जागरूकता और सहयोग द्वारा सामाजिक सम्बन्धों को स्थापना नहीं करते, उनके द्वारा एक सामाजिक समूह का निर्माण नहीं हो सकता।

Ogburn and Nimkoff (ऑगबर्न तथा निमकॉफ) के अनुसार, "जब कभी भी दो या दो से अधिक व्यक्ति समीप आकर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।" इस परिभाषा के द्वारा ऑगबर्न ने स्पष्ट किया है कि कुछ व्यक्तियों द्वारा एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने के अतिरिक्त उनका शारीरिक रूप से कुछ समीप होना भी समूह निर्माण के लिए आवश्यक है।

Williams (विलियम्स) ने पारस्परिक क्रियाओं के महत्व पर बल देते हुए सामाजिक समूह को परिभाषित किया है। आपके शब्दों में, "सामाजिक समूह ऐसे व्यक्तियों का एकीकरण है जो एक-दूसरे के साथ क्रिया करते हैं और इस अन्तक्रिया को एक इकाई के रूप में ही अन्य सदस्यों द्वारा पहचाना जाते हैं।"

इस परिभाषा में अन्तक्रिया को समूह के आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है।

Albion Small (स्माल) के अनुसार "समूह का अर्थ कम या अधिक एसे व्यक्तियों से है जिनके बीच इस प्रकार के सम्बन्ध विद्यमान हों कि उन्हें एक सम्बद्ध इकाई के रूप में देखा जाने लगे।"[2] इसका तात्पर्य है कि एक सामाजिक समूह का निर्माण करने वाले व्यक्तियों के बीच इस प्रकार की अन्तक्रियाएँ होना आवश्यक है जिनसे पारस्परिक सहयोग को प्रोत्साहन मिल सके।

अनेक दूसरे समाजशास्त्रियों ने भी सामाजिक समूह को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है लेकिन इन सभी परिभाषाओं के आधार पर समूह की सामान्य प्रकृति को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है जब कुछ व्यक्ति जागरूक अवस्था में एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर सम्बन्धों की स्थापना करते हैं तो व्यक्तियों के इसी स्थायी अथवा अस्थायी संगठन को हम एक सामाजिक समूह कहते हैं।